सेना में हैं कई विकल्प

सेना में कमीशन ऑफिसर की भर्ती के लिए साल में दो बार एग्जाम होते हैं। 12वीं पास साइंस स्टूडेंट्स एनडीए के लिए आवेदन कर सकते हैं, वहीं ग्रेजुएट स्टूडेंट्स सीडीएसई के लिए आवेदन कर सकते हैं। दोनों ही एग्जाम यूपीएससी द्वारा आयोजित कराए जाते हैं। लिखित परीक्षा पास करने वाले अभ्यर्थियों को एसएसबी इंटरव्यू के लिए कॉल किया जाता है

राजपथ पर 26 जनवरी को परेड देखकर और राष्ट्रगान सुनकर एकाएक देशभक्ति की लौ मन में जग जाती है। मन देश सेवा के लिए आकुल हो उठता है। देशभक्ति की चाह रखने वाले युवा सैन्य सेवा में भर्ती होने के सपने भी देखने लगते हैं। युवाओं के लिए यह सपना न सिर्फ रोजगार का जरिया बनता है बल्कि समाज में प्रतिष्ठा भी दिलाता है। सेना में भर्तियां मुख्यता दो तरह से होती हैं। कमीशन ऑफिसर और नॉन कमीशन ऑफिसर। दोनों ही कैटगरी में भर्ती प्रक्रिया भी अलग-अलग होती है।

किसी भी देश के सेना की क्षमता उसके तीनों विंग आर्मी, नेवी और एयरफोर्स को मिलाकर होती है। तीनों विंग का अपना अलग-अलग काम होता है। लेकिन इनमें मजबूत और अहम कड़ी है थल सेना। इसके विभिन्न विभागों के विभिन्न पदों पर आज युवाओं को आने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जरूरत है इन्हें जानने और उसकी तैयारी करके थल सेना में जगह बनाने की। एक बार मौका हासिल करके एक बेहतर मुकाम हासिल किया सकता है। समाज और देश में इसके जरिए सम्मान भी पाया जा सकता है। साथ इसके जरिए जीवन में अनुशासन भी लाने का अवसर मिलता है।

सैन्य सेवाओं में कमीशन अधिकारी के रूप में भर्ती मुख्य तौरपर संघ लोक सेवा आयोग के तहत होती है। इसके अलावा तकनीकी शाखा, महिलाओं के लिए विशेष भर्ती और एनसीसी के जरिए होने वाली भर्ती और सैन्य निदेशालय के अंतर्गत होने वाली भर्तियां शामिल हैं।

बारहवीं स्तर पर

परमानेंट कमीशन के तहत बारहवीं पास छात्र जिन्होंने गणित और भौतिकी की पढ़ाई की है वे एनडीए की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। यूपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा को पास करने के बाद अभ्यर्थियों को एनडीए का फाइनल इंटरव्यू क्लीयर करना हो ता है। यह परीक्षा साल में दो बार आयोजित कराई जाती है। बारहवीं पास युवा जिनकी उम्र 16 से 19 के बीच होती है, वे इसमें शामिल हो सकते हैं। इसके तहत चयनित उम्मीदवारों को लेफ्टिनेंट के रूप में शुरुआत करनी पड़ती है। एनडीए में चयनित छात्रों को थलसेना की ट्रेनिंग के लिए देहरादून स्थित इंडियन मिलिट्री एकेडमी में भेजा जाता है।

स्नातक स्तर पर

यूपीएससी की ओर से अखिल भारतीय स्तर पर संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा (सीडीएसई) आयोजित की जाती है। साल में दो बार होने वाली यह लिखित परीक्षा स्नातक या उसके समकक्ष युवाओं के लिए है। लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थियों को इंटरव्यू के लिए कॉल किया जाता है। इंटरव्यू क्लीयर करने वाले अभ्यर्थी जो थल सेना में जाने के इच्छुक हैं, उन्हें इंडियन मिलिट्री एकेडमी में ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है। इसमें गैर तकनीकी कैटेगरी में सीधी भर्ती इंडियन मिलिट्री सेवा में होती है। इंजीनियरिंग ग्रेजुएट को तकनीकी सेवा के तहत भर्ती के लिए सर्विस सलेक्शन बोर्ड की ओर से आयोजित साक्षात्कार से गुजरना होता है। उम्र 20 से 27 वर्ष होनी चाहिए।

यूनिवर्सिटी स्तर की स्कीम

यूनिवर्सिटी या कॉलेज स्तर पर इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष के छात्र भी इसमें आवेदन करके इस सेवा में काम के अवसर तलाश सकते हैं। वे तकनीकी शाखा में बतौर कमीशन अधिकारी भर्ती हो सकते हैं। यहां चयन आमतौर पर साक्षात्कार के आधार पर सर्विस सलेक्शन बोर्ड के द्वारा होता है। अन्य विकल्पों के रूपों में बारहवीं में जिन्होंने गणित, भौतिकी और रसायनशास्त्र पढ़ी है वे भी तकनीकी शाखा में भर्ती हो सकते हैं। उनका चयन सीधे इंडियन मिलिट्री सेवा के लिए किया जाता है। उनके लिए हर साल जनवरी और जुलाई में कोर्स शुरू कराया जाता है। अन्य विकल्प में सरकार ने विशेष समर्थन के लिए विशेष कमीशन अधिकारी का भी प्रावधान किया है। इसके तहत आने वाले पद जूनियर कमीशन अधिकारी के रूप में भरे जाते हैं। अर्मी की मेडिकल विंग में जाने वाले अभ्यर्थियों को बारहवीं के बाद ऑल इंडिया स्तर पर हो ने वाली मेडिकल परीक्षा पास करनी होती है। सफल होने पर उन्हें आर्म्स फोर्सेज मेडिकल कॉलेज में दाखिला मिलता है। चार साल का कोर्स करने पर उन्हें सैन्य सेवा में डॉक्टर के रूप में काम करने का मौका मिलता है।

> स्किल्स इस सेवा में आने के लिए शारीरिक तौर पर फिटनेस और शैक्षिक योग्यता के अलावा सकारात्मक सोच का होना जरूरी है। युवाओं में विपरीत परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता, जोखिम उठाने का साहस और पहल करने की क्षमता का होना जरूरी है। साहस और जोखिम जैसी चीजें ही इसमें युवाओं को बहादुर अधिकारी के रूप में पहचान दिलाता है। अनुशासन का भी होना एक अनिवार्य गुण है

महिलाओं के लिए विशेष भर्ती

स्कीम महिलाओं को भी सेना में बतौर डॉक्टर, नर्स या अन्य पदों पर तकनीकी और गैर तकनीकी शाखा में काम कर सकती हैं। अविवाहित, विधवा या तलाकशुदा महिलाओं को एक तय उम्र के अंदर आवेदन करना होता है। महिला अधिकारियों को ट्रेनिंग के लिए ऑफिसर ट्रेनिंग एकेडमी चेन्नई भेजा जाता है।

एनसीसी कैडेट्स के लिए विशेष एंट्री

एनसीसी कैडेट्स भी सेना में बतौर कमीशन ऑफिसर के लिए आवेदन कर सकते हैं। जिन अभ्यर्थियों के पास एनसीसी का बी या सी सर्टिफिकेट है वे शार्ट सर्विस कमीशन (एसएससी) के तहत आवेदन कर सकते हैं। यह परीक्षा भी सीडीएसई के अंतर्गत यूपीएससी आयोजित कराता है। सेना में कमीशन अधिकारियों को उम्दा सैलरी के साथ-साथ तमाम तरह की सुविधाएं भी दी जाती हैं। शुरुआत में वेतनमान 45 हजार से 50 हजार के बीच होता है। यही नहीं कमीशन अधिकारियों का रेग्युलर प्रमोशन भी किया जाता है।

स्पेशलिस्ट की भर्ती

सैन्य सेवा में लॉ अधिकारी या शिक्षा अधिकारी के रूप में विशेषज्ञों का भर्ती अभियान भी समय समय पर चलाया जाता है। लॉ ग्रेजुएट को यहां लॉ अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर मुहैया कराया जाता है। इसी तरह धार्मिक शिक्षकों की भी भर्ती जूनियर कमीशंड अधिकारी के रूप में की जाती है। इसके लिए लिखित प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार आदि आयोजित किए जाते हैं। स्थायी कमीशन में अधिकारी स्तर पर भर्ती और नौकरी रिटायरमेंट तक होती है। शार्ट कमीशन में 5 साल के लिए काम करने का मौका मिलता है। इसमें आगे चलकर पांच साल और सेवा का विस्तार होता है। अधिकतम 14 वर्ष तक काम कर सकते हैं। शार्ट सर्विस कमीशन को परमानेंट कमीशन में भी बदलने का रास्ता है।

रिसैप्शनिस्ट का करियर आसान नहीं

- रिसैप्शनिस्ट का पहनावा शालीन हो। भड़कीले कपड़े नहीं पहनने चाहिएं। मौसम को ध्यान में रखते हुए वस्त्रों और रंगों का चयन कर कपड़े पहनने चाहिएं।
- अपने समय को समायोजित करना आना चाहिए क्योंकि अधिकतर दफ्तरों, नर्सिंग होम्स और होटलों में इन्हें कई आगंतुकों का स्वागत करना होता है। इसलिए समय को इधर-उधर की बातों पर बर्बाद न कर काम और आगंतुकों का स्वागत करने में लगाना चाहिए।
- रिसैप्शनिस्ट को आगंतुक का उचित मार्ग निर्देशन करना आना चाहिए।
- बालों की सफाई का विशेष ध्यान रखें। बाल चिपचिपे और तैलीय नहीं होने चाहिएं। बालों को उचित रूप से पिनअप करें या बांध कर रखें क्योंकि खुले बाल काम करने में बाधा डाल सकते हैं।
- अधिक आवाज करने वाले जूते न पहनें।
- अगर आप स्लीवलैस या कोई ऐसी पोशाक पहन रही हैं जिसमें आपको वैक्सिंग की आवश्यकता हो तो वैक्सिंग करवाने के पश्चात ही वैसी पोशाक पहनें।
- बदलती हुई प्रवृत्तियों पर नजर रखें। ऐसा न हो कि आप समय से पीछे चलें और आपको पिछड़ा हुआ माना जाए। इतनी आधुनिक भी न बनें कि लोग आपका फायदा उठाने में हिचकें नहीं।
- बोलते समय भाषा पर संयम रखकर आगंतुकों से बात करें।
- आगंतुकों का मुस्कुरा कर स्वागत करें। जितनी मदद आप कर सकती हैं, करें।
- टैलीफोन पर संक्षिप्त रहें पर बात को स्पष्ट समझाने की क्षमता रखें।
- उठते-बैठते समय चुस्ती से उठें। इस व्यवसाय में ढीला व्यक्तित्व ठीक नहीं। यह आगंतुक पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- शृंगार हल्का करें। भड़कीला शृंगार व्यक्तित्व को निखारने की बजाय खराब लगता है।
- क्वालिटी का हल्की महक का परफ्यूम प्रयोग में लाएं। यदि पसीना अधिक आता हो तो डियो लगाना न भूलें।
- आगंतुक के सामने सहनशीलता से बात करें।
- अपने कान और आंख तेज रखें ताकि सब स्पष्ट देख और सुन सकें।
- हिन्दी, अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर बोलने और लिखने का पूरा कमांड होना चाहिए ताकि आगंतुक की बात समझ सकें और उनको अपनी बात समझा सकें।

बनना है टॉपर तो आजमाएं यह टिप्स

टॉपर बनने के लिए कड़ी मेहनत तो करनी ही पड़ती है परंतु उज्ज्वल भविष्य का सटीक मंत्र है- सही काम करें, सही तरीके से करें, सही समय पर करें। अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए कभी भी अपने आप से झूठ नहीं बोलना चाहिए।

- सफलता का सीधा संबंध परिश्रम से है, जो छात्र परिश्रम से डरते हैं, वे कभी सफलता नहीं पा सकते।
- परीक्षा भी उन्हीं छात्रों को ईनाम देती है, जो स्वयं पर यकीन रखते हुए अपना कार्य पूरी लगन से करते हैं।
- लगन से कार्य करने वाले कभी भी कांटों की परवाह नहीं करते।
- लगन और बुद्धिमानी के साथ किया हुआ काम कभी व्यर्थ नहीं जाता।
- जो छात्र टॉपर बनना चाहते हैं, वे पहले तो यह सोचना छोड़ दें कि मैं भाग्यहीन हूं।
- कदम-कदम पर कठिनाइयां छात्रों का रास्ता रोकती हैं और जो इनसे बचना जानते हैं वही टॉपर बन पाते हैं।
- जो छात्र अपनी आंख अर्जुन की भांति सिर्फ अपने लक्ष्य की ओर केंद्रित रखते हैं, उन्हें हर हाल में सफलता मिलती है।

मॉनीटरिंग और इवैल्यूएशन में कॅरियर बनाएं

सफलता की ऊंचाईयां पाएं

मॉनीटरिंग की प्रक्रिया वर्तमान में चल रहे प्रोजैक्ट्स तथा प्रोग्राम्स से डाटा का सिस्टमैटिक कलैक्शन है ताकि भविष्य में प्रैक्टिस को सुधारा जाए, बाहरी जवाबदेही को सुनिश्चित बनाया जाए और जाने-पहचाने फैसले लिए जाएं। मॉनीटरिंग की गतिविधि एक ऐसा काम है जो किसी प्रोजैक्ट की प्लानिंग स्टेज से शुरू होता है। मॉनीटरिंग उन प्रक्रियाओं तथा अनुभवों का दस्तावेजीकरण है जिनका इस्तेमाल आगे चल कर प्रोजैक्ट डिसीकान मेकिंग में किया जाता है।

मॉनीटरिंग से योजनाओं की प्रगति की जांच में भी सहायता मिलती है। मॉनीटरिंग के माध्यम से तैयार डाटा का इस्तेमाल इवैल्यूएशन में किया जाता है। इवैल्यूएशन व्यवस्थित ढंग से किया गया मूल्यांकन है। साथ ही यह किसी चल रहे या पूरे हो चुके प्रोजैक्ट की कार्यप्रणाली का बाहरी मूल्यांकन भी है। इवैल्यूएशन से डाटा की पहचान में सहायता मिलती है जो रणनीतिक निर्णय लेने में सहायक हो सकता है। इस तरह से यह प्रोजैक्ट्स के विभिन्न पहलुओं जैसे इसकी प्रासंगिकता, प्रभावी होना, निपुणता, प्रभाव तथा सस्टेनेबिल्टी संबंधी समाधान खोजने में सहायता करती है।

एम. एंड ई. (मॉनीटरिंग एंड इवैल्यूएशन) किसी भी सामाजिक प्रोग्राम या प्रोजैक्ट से जुड़ा हुआ प्रमुख तत्व है। सोशल सैक्टर में विकासात्मक प्रोजैक्टों के लिए एम. एंड ई. स्टेक होल्डर्स के लिए सस्टेनेबिल्टी तथा सूटेबिल्टी संबंधी एक दृष्टि उपलब्ध करवाती है। सोशल सैक्टर के विकास के साथ ही कई सरकारी सैक्टर तथा गैर-सरकारी सैक्टर्स द्वारा असंख्य स्कीमें शुरू की गई हैं जिनके लिए मॉनीटरिंग तथा इवैल्यूएशन की प्रक्रिया की विशिष्ट जानकारी की जरूरत होती है।

योग्यताएं

इवैल्यूएशन तथा मॉनीटरिंग में विशिष्ट ट्रेनिंग उम्मीदवार को सोशल सैक्टर में जॉब प्राप्त करने में सहायता कर सकती है। सोशल सैक्टर ज्वाइन करने के लिए मुख्य योग्यता है किसी भी विषय में ग्रैजुएशन। साथ ही किसी भी विषय में मास्टर्स या मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.)। मॉनीटरिंग एंड इवैल्यूएशन में ग्रैजुएशन तथा सर्टीफिकेट कोर्स सोशल सैक्टर में काम करने के लिए अत्यधिक सहायक होता है।

जॉब तथा सैलरी

भारत में 3.3 मिलियन के लगभग एन.जी.ओ. यानी गैर-सरकारी संगठन कार्यरत हैं जिनमें से 40 हजार विश्व स्तर पर काम कर रहे हैं। सोशल सैक्टर में काम करने के इच्छुक लोग सोशल सर्विस प्रोफैशनल, सोशल सर्विस असिस्टैंट या सोशल सर्विस एग्जीक्यूटिव के तौर पर जॉब कर सकते हैं। मास्टर ऑफ सोशल वर्क की डिग्री के साथ प्रथम श्रेणी वाला ग्रैजुएट सोशल वर्क क्षेत्र में शुरूआती तौर पर 20 से 25 हजार रुपए प्रति माह की सैलरी पा सकता है।

अनुभव बढ़ने के साथ-साथ सैलरी भी बढ़ती जाती है। सोशल सैक्टर में बने रहने के लिए आपके मन में समाज परिवर्तन की इच्छा होने के साथ ही समाज कल्याण संबंधी प्रोजैक्टों की समझ होनी चाहिए। साथ ही प्रोजैक्ट की मॉनीटरिंग और इवैल्यूएशन अच्छी तरह आनी चाहिए। मॉनीटरिंग एंड इवैल्यूशएन में एक सर्टीफिकेट कोर्स भी आपके लिए बहुत सहायक होता है।